Reg No 177/2008-2009 ISSN: 2322–0317

PSSH PERSPECTIVE of SOCIAL SCIENCES and HUMANITIES

An International Multidisciplinary Refereed Research Journal

VOL 2, NO 2

JULY - DECEMBER 201

Biannual

Editor

Dr Hemant Kumar Singh

Assistant Professor

Economics Department

Madan Mohan Malviya PG College

Deoria (UP)

Publisher

Herambh Welfare Society

Varanasi (India)

भूमण्डलीकरण के दौर में स्त्री

हनुमत लाल मीना

भूमण्डलीकरण वर्तमान समय की सर्वाधिक चर्चित परंतु जटिल अवधारणा है। सामान्य तौर पर 'भूमंडलीकरण' से तात्पर्य तीव्र विश्वव्यापी सूचना क्रांति, ज्ञानोदय, अर्थव्यवस्था, सांस्कृतिक आदान–प्रदान, सीमा विहीन संसार और आधुनिक राष्ट्र–राज्य की क्षेत्रीय प्रभुता को कम करने से है। हालांकि भूमंडलीकरण ने एक तरफ सूचना और संचार क्रांति के द्वारा दुनिया को बहुत नजदीक ला दिया तो दूसरी ओर इन्हीं साधनों को शोषण का औजार भी बना दिया। इसलिए पॉल स्वीजी ने इसे सत्ता और दासता की सुंसगत व्यवस्था माना है तथा चतुर्दिक विकास के लिए पूंजी को मानवीय मूल्यों से जोड़ने की वकालत की है।

भारत के प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने 11 अक्टूबर 2006 को केम्ब्रिज विश्वविद्यालय में दिए अपने भाषण में कहा है कि –''भूमण्डलीकरण निजी एवं क्षेत्रीय आय की विषमता को नहीं हटा पाया है। कई विकासशील देशों में विकास ग्रामीण क्षेत्रों को नजरअंदाज करके हो रहा हैं..... अमीर और गरीब के बीच की खाई चौड़ी होती जा रही है। इसलिए हमें एक ऐसी नई भूमंडलीय दृष्टि की जरुरत है जो सही अर्थो में ज्यादा साझेदारी के साथ भूमंडलीकरण का फायदा दे सके यानि शहर और गांव दोनों को ध्यान में रखकर विकास कर सके।''[1]

ऐतिहासिक रूप में भूमंडलीकरण उस पूंजीवादी विस्तार की ऐतिहासिक प्रक्रिया है जिसने यूरोप में शुरु होकर बाद में समूचे विश्व को अपने दायरे में समेट लिया। अपने उदय के प्रारंभ से ही सभी पूंजीवादी प्रतिष्ठानों की महत्वाकांक्षा सारे संसार में अपना वर्चस्व फैलाने की रही है। 'कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र' में मार्क्स–एंगेल्स ने लिखा है कि –''अपने माल के बराबर फैलते हुए बाजार की जरुरत के कारण पूंजीपति वर्ग दुनिया के कोने–कोने की खाक छानता हैं वह हर जगह घुसने को, हर जगह पैर जमाने को, हर जगह सम्पर्क कायम करने को बाध्य होता है। विश्व बाजार को अपने लाभ के लिए इस्तेमाल कर पूंजीपति वर्ग ने हर देश में उत्पादन और खपत को एक सार्वभौमिक रुप दे दिया है।''[2] इस प्रकार पूंजी जो पहले व्यावसायिक गतिविधियों में फलती–फूलती थी अब औद्योगिक उत्पादन के रुप में विकसित

[1] Towards an inclusive globalization- speech by manmohan singh, The Hindu 13 Oct. 2006, Editorial.

[2] मार्क्स– एंगेल्स, कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र, संस्करण 1993, प्रगति प्रकाशन, पृ. सं. 40

होने लगी। इसलिए मार्क्स– एंगेल्स ने पूंजीपतियों द्वारा खड़ी की गयी जिस नयी व्यवस्था का जिक्र किया है, उसका व्यवहारिक दृश्य हमें आज के भूमंडलीय युग में स्वाभाविक रुप से मिल जाता है।

कभी–कभी ऐसा तर्क दिया जाता है कि भूमंडीकरण आर्थिक दृष्टि के साथ–साथ सामाजिक दृष्टि से भी लाभकारी है। जगदीश भगवती ने भूमंडलीकरण को समाजशास्त्रीय या नृतत्व विज्ञान Anthropological) के साथ–साथ अर्थशास्त्रीय दृष्टि से भी परखने की वकालत की है। यद्यपि वे मानते हैं कि भूमंडलीकरण की प्रक्रिया में कुछ कमियां हैं परन्तु विकास के माध्यम से उन्हें दूर किया जा सकता है। इसलिए भूमंडलीकरण के मानवीय पक्ष का समर्थन करते हुए वे कहते हैं कि – इसने गरीबी और बालश्रम को कम किया, महिलाओं का सशक्तीकरण किया, लोकतंत्र को मजबूत किया, पर्यावरण प्रदूषण को कम किया एंव सामाजिक कार्यक्रमों को लागू किया। 'इन डिफेंस ऑफ ग्लोबलाइजेशन' में उन्होंने लिखा है कि– ''भूमंडलीकरण अगर आर्थिक दृष्टि से घालमेल बढ़ने के संदर्भ में हितकर है तो सामाजिक दृष्टि से अहितकर। यह भय अमीर एंव गरीब दोनों देशों में कई क्षेत्रों को लेकर बना है– मसलन गरीबी की प्रबलता, एकजुटता एवं दूसरे श्रम अधिकारों के क्षरण को लेकर लोकतंत्र की भावना में कमी, स्त्री उत्पीड़न स्थानीयता एवं स्थानीय संस्कृति का विघटन एवं पर्यावरण का नष्ट होना आदि को लेकर।''[1] भूमंडलीकरण की प्रक्रिया में स्त्रियों को हुए लाभ के संबंध में जगदीश भगवती कहते हैं कि भूमंडलीकरण ने स्त्रियों को समान वेतन, लिंगाधारित असमानता की समाप्ति, स्वास्थ सुरक्षा आदि के माध्यम से अधिक सामाजिक अवसर उपलब्ध करवाया जो कि भूमंडलीकरण की अनुपस्थिति में विकासशील देशों की संकीर्ण मानसिकता में संभव नहीं था। इसलिए भूमंडलीकरण को सामाजिक हित के आधार पर आज विश्व का सर्वाधिक शक्तिशाली बल मानते हुए लिखते है कि ''भूमंडलीकरण सिर्फ आर्थिक दृष्टि से ही नहीं बल्कि सामाजिक दृष्टि से भी हितकर है।''[2]

आधुनिक भूमंडलीकरण का पहला और प्रथम अर्थ है एक विश्व अर्थतंत्र और विश्व बाजार का निर्माण जिससे प्रत्येक राष्ट्र की अर्थव्यवस्था को अनिवार्य तौर से जुड़ना होगा। इसका दूसरा अर्थ है दुनिया की राजनीति को इसी अर्थतंत्र और बाजार की जरुरतों के हिसाब से संचालित करने की परियोजना। इसका तीसरा अर्थ है कम्प्यूटर, इंटरनेट और संचार के अन्य आधुनिकतम साधनों के जरिए दुनिया में राष्ट्रों, समुदायों, संस्कृतियों और व्यक्तियों के बीच फासलों का कम से कमतर होते चले जाना। इसका चौथा अर्थ है उपग्रहीय टेलीविजन के माध्यम से एक भूमंडलीय संस्कृति की रचना करना। राष्ट्रीय संस्कृति के केन्द्र में नागरिक रहता था पर इस संस्कृति के केन्द्र में भूमंडलीय उपभोक्ता रहता है। इस भूमण्डलीय संस्कृति के उपर अमेरिकी सांस्कृतिक

[1] Bhagwati, Jagdish; in defence of globalization, Edition 2004, OXford University Press, Delhi, Page.30.

[2] Bhagwati, Jagdish; in defence of globalization, Edition 2004, OXford University Press, Delhi, Page.28.

मुहावरा बुरी तरह हावी है। इसीलिए हेनरी किसिंजर ने बेखटके भूमंडलीकरण को अमेरिकीकरण की संज्ञा भी दी है। यह भी कहा जाता है कि भूमंडलीकरण के रूप में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया अपने चरम पर पहुंच गयी है और अब सारा जगत एक ही सांचे में ढाल दिया जायेगा।

भूमंडलीकरण मूलतः एक राजनीति है जिसे पहले भी अपनाया गया था और आज उसका उपयोग विकास के नाम पर विकासशील और गरीब देशों के शोषण से जुड़ा हुआ है। भूमंडलीकरण ने एक नई आर्थिक युद्व नीति तय की है जिसमें विकासशील और गरीब देशों का पिसना तय है। चाहे जरूरत से ज्यादा अपने किसानों को विकसित देशों द्वारा सब्सिडी देने की बात हो, चाहे मानवीय श्रम की अपेक्षा हो, चाहे पर्यावरण की उपेक्षा हो, चाहे उपभोक्तावादी दृष्टि हो आदि न जाने कई नीतियां भूमंडलीकरण के नाम पर विकासशील व गरीब देशों के खिलाफ षड्यंत्र रच रही हैं। भूमंडलीकरण का विरोध होने का मूल कारण है गरीब और विकासशील देशों की उपेक्षा, एकतरफा वर्चस्व और मानवीयता के प्रति गैर जिम्मेदाराना रूख। अगर इस नीति में विकासशील और गरीब देशों की स्थिति को ध्यान में रखकर, इन देशों के हिसाब से विकास के लिए व्यापार के लिए बाजार की नीति तय की जाए तो भूमंडलीकरण शब्द अपनी भूमिका मानवीय संदर्भो में निभा सकता है।

भूमंडलीकरण की व्यवस्था को कार्य के स्तर पर बाजार द्वारा लागु किया जाता है। बाजार हर चीज को वस्तुपरक दृष्टिकोण से देखता है। चाहे वह संस्कृति, धर्म, भावना जैसी मानवीय चीज ही क्यों न हो। बाजार भूख पैदा करता है वस्तु के लिए जिसके लिए वह कई तरह के हथकंडे अपनाता है। भमूंडलीकरण के व्यापार में वस्तु का जिस प्रकार से आयात–निर्यात हुआ है, उसमें स्त्री के प्रति पारंपरिक वस्तूवादि अवधारणा का इस्तेमाल किया गया, जिसका सांस्कृतिक फायदा पुरुषों को मिल रहा है। स्त्री पुरुषवादी समाज में एक प्रजनन कोख मात्र बनकर रह गई है जिसकी पवित्रता और नैतिकता पुरुषवादी समाज तय करता है। उसकी आजादी का स्वरूप क्या और कितना होना चाहिए, यह सब पुरुष के अधीन था और है भी। समाज की सारी जड़ परंपरा का निर्वाह किस प्रकार करना है यह बात स्त्री को बताई जाती थी, जो आज भी करीब–करीब उसी प्रकार से मौजुद है, बस थोड़ा सा स्वरूप बदल गया है। ''पूंजीवादी राष्ट्रों की मिलीभगत के परिणामस्वरुप जो भूमंडलीकरण की नीति अपनाई गई, जिसमें उन्होंने अपने लिए सबसे सरल फायदे के लिए स्त्री को चुना। पूंजीवाद ने अपनी इस रणनीति को भूमंडलीकरण के माध्यम से अपनाया।''[1]

पाश्चात्य सोच और विचार, प्रगतिशील दृष्टिकोण, आधुनिक बोध ने स्त्री को जिस प्रकार से अपनी पराधीनता का अहसास कराया, इससे स्त्री

[1] सिन्हा, सच्चिदानन्द, भूमंडलीकरण की चुनौतियां, संस्करण 2007, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. सं. 134

को आवाज उठाने और पितृसत्ता की कैद से निकलने की ललक और ताकत भी पैदा की। इस चेतना का इस्तेमाल भूमंडलीकरण के माध्यम से बाजार ने अपनाया, जो कि प्यासे को मिलने वाले पानी का स्त्रोत जैसा है, पर इस पानी का स्वाद पुरुषवादी है जिसने स्त्री को अपने तरीके से इस्तेमाल किया। जो उसे मुक्त जो जरुर करता है लेकिन उसे उसकी तरह से नहीं बल्कि अपने तरीके से। सस्ते श्रम की खोज स्त्री मुक्ति का एक आधार तो बना, साथ ही सेक्स की पुतली बनाकर बाजार ने उसे मनोरंजन और आरामदायक वस्तु बनाए रखा।

भूमंडलीकरण औरत की छवि में प्रदर्शन के तरीके से नयापन लाया न कि उसके व्यक्तित्व के आन्तरिक विकास और न ही पुरुषवादी मानसिक सरंचना में बदलाव आया। बाजार के माध्यम से एक और तो स्त्री को स्पेस मिल रहा है वही दूसरी और धर्म, परंपरा, संस्कार जैसी मान्यताओं के आधार पर स्पेस को वापिस खींचा जा रहा है। ''भूमंडलीकरण ने परंपरा और धर्म के अलावा आर्थिक आधुनिकीकरण और वैकासिक आग्रहों को भी नई पितृसत्ता का जनक बना दिया जबकि कभी इन दोनों को औरत की आजादी का संभावित जरिया माना जाता था। इस तरह भूमंडलीकरण के तहत पितृसत्ता और मजबूत हो गयी।''[1]

भूमंडलीकरण के दौर में स्त्री की शक्ति बढ़ी है। व्यवसायिक तौर पर उसके पास हर सवाल का जवाब है। भूमंडलीकरण के बहाने आज स्त्री के पास अनेकों विकल्प हैं। आज वह प्रत्येक क्षेत्रो में मौजुद है। इसमें कोई शक नहीं है कि भूमंडलीकरण के माध्यम से कई विकल्प खुले हैं, जिन्होंने स्त्री को 'पावर वूमन' बनाने में सहयोग दिया, लेकिन यह 'पावर वूमन' बाजार का एक मिथ है जिसे चाहे अनचाहे हमें स्वीकार करना ही पड़ेगा कि इस मिथक में यथार्थ की भी मौजूदगी है। इस मिथक ने स्त्री के लिए एक आर्थिक स्थिति दी है। भूमंडीकरण में जो आर्थिक रास्ते स्त्री को मिले हैं, वो आर्थिक रास्ते स्त्री को उसे अपने पैरों के नीचे की जमीन देते हैं, जिस पर स्त्री ठोस तरीके से खड़ी होकर अपने अधिकारों को प्राप्त कर सकती है। इस पूरी आर्थिक आजादी को बड़े ही नकारात्मक तरीके से प्रस्तुत किया गया। पुरुषवादी मानसिकता ने स्त्री की ताकत को यौनता का नाम देकर पुरुष को अपने वश में करने वाली एक वस्तु के रूप में रखा साथ ही उसकी उपलब्धियों की पुरुष से तुलना करते हुए, पुरुष को एक समर्थ स्त्री के सामने कमजोर और मासूम बना दिया गया, जो संस्कृति और परंपरा को किसी प्रकार से निभा रहा है। जिसकी अपेक्षा स्त्री ने अपनी मान्यताओं एवं मूल्यों को भूला दिया है।

भूमंडलीकरण ने परंपरावादी और कट्टरपंथी विचारधारा के लोगों को, पावर वूमन के नाम पर हिला तो जरुर दिया परन्तु वहीं दूसरी ओर उसकी पावर और आजादी के नाम पर स्त्री को बाजार की बिकाउ वस्तु के रूप में और भी ज्यादा व्यवसायिक रूप में बदल दिया। इस व्यवसायिकता का स्वरूप बाजार के सिर्फ उस रूप में ताल्लुकात नहीं रखता है, जो मात्र सौंदर्य उद्योगों

[1] हंस, मार्च 2001, सं. राजेन्द्र यादव, पृ.सं.27

से जुड़ा हुआ है। अपितु यह व्यवसाय इतिहास के पन्नों पर हमेशा से मौजूद रहा है जिसे भूमंडलीकरण के बाद आमदनी का अच्छा खासा और साथ ही व्यापक स्त्रोत बनाया गया है।

भूमंडलीकरण के इस युग में स्त्री का शरीर अब ग्लोबल वेश्यावृत्ति और बलात्कार के लिए ज्यादा आसान हो गया है। पर्यटन, शादी, नौकरी आदि न जाने किन–किन तरीकों से छलावा देकर एवं यौन खिलौने के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है। उसकी मासूमियत, परतंत्रता, गरीबी के बहाने बाजार में उसे एक वस्तु की तरह रख दिया जाता है, जहां उसके शरीर का मोल भी स्त्री खुद तय नहीं कर सकती और न ही मूल्य का उचित लाभ उसे मिलता है।

''भूमंडलीकरण ने औरतों को अतीत की किसी भी कालावधि के मुकाबले अधिक निर्ममता और संपूर्णता से एक बिकाउ जिंस में बदल दिया है यहां औरत को बिकाउ माल में बदलकर केवल सौंदर्य उद्योग के संदर्भ में या आमतौर पर बाजार की आलोचना के नए पुराने मुहावरे के तौर पर नहीं बताया जा रहा है। दास प्रथा के दिनों से भी ज्यादा और सांमतवादी युग की व्यापकता को भी पीछे छोड़ते हुए भूमंडलीकरण के पिछले दस वर्षो में दुनिया के पैमाने पर औरतों के निर्यात के जरिए अरबों खरबों डालर की रकम कमाई गयी है। निर्यात करने वाले देशों के प्रति व्यक्ति आय से आयात करने वाले देशों में प्रति व्यक्ति आमदनी तकरीबन दुगनी है। ये गरीब देश वही हैं जिन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक की सलाह पर ढांचागत समायोजन कार्यक्रमों को अपनाया था। ये वही देश है जिन्होंने विदेशी पूंजी के आने जाने पर लगी परंपरागत बंदिशों को क्रमशः हटा लिया है। ये भूमण्डलीकरण की होड़ में कूदने वाले देश हैं। लेकिन इस चक्कर में वे कर्ज के बोझ तले दबे गये हैं। उनकी कृषि और उद्योग उन्हें कर्ज उतारने के लिए आवश्यक विदेशी मुद्रा नहीं दे पा रहे हैं इसलिए वे औरतों का निर्यात करके डालर और पाउंड हासिल करने में लगे हैं।''[1]

भूमंडलीकरण के बाद निजी क्षेत्रों में रोजगार का जो अवसर सभी को मिला है, उसमें स्त्री की सबलता पुरुष प्रताड़ना की शिकार हो रही है। निजी क्षेत्रों में सरकारी क्षेत्रो की अपेक्षा बॉस द्वारा नौकरी पर रखने या छुड़वाने का अधिकार बहुत ज्यादा रहता है। जिसका फायदा पुरुषवादी बॉस उठाता है। सामाजिक और पारिवारिक दबाव के कारण कई स्त्रियां इस फायदे के विरुद्व नहीं जा पाती हैं। लेकिन कई ऐसी भी लड़कियां हैं जो अपने को सफल या आर्थिक आधार देने के लिए पहले से तैयार रहती है, बॉस की कामवासना के लिए अपनी जिन्दगी को संवारने की लालसा उन्हें मजबूर करती है। कई स्त्रियां ना चाहते हुए भी परिस्थितिवश पुरुषों की वासना का शिकार बनती हैं। बाजार ने जो स्त्री को 'पावर वुमैन' बनने का मौका दिया है, उसमें इस सबल स्त्री की नई मजबूरियां है जिसका संस्कृति और पंरपरा के ठेकेदार

[1] हंस मार्च 2001, सं. राजेन्द्र यादव, पृ. सं. 28

पुरुष कई तरीके से फायदा उठाते हैं। बाजार के माध्यम से यौनता को उभारने का काम भी पितृसत्ता ने किया, जो स्त्री के लिए अपने ढंग से एक ऐसा जाल बुनती है जिसका शिकार किसी तरीके से स्त्री जरुर होती है।

स्त्री को भूमंडलीकरण के माध्यम से जो स्पेस मिला है उसमें एक ऐसी स्त्री तैयार हो रही है जो एक नई स्त्री है जिसमें किसी से संवाद करने की शक्ति है, जो अपने अत्याचारों के खिलाफ लड़ सकती है। बाजार ने जो स्त्री की छवि तैयार की है। उसमें आज की स्त्री पुरुष की नजरों में भले ही बगैर बुद्वि की हो पर तेज तर्रार और बोल्ड है जो परंपरागत धारणाओं को सर झुकाकर स्वीकार नहीं कर सकती। उसके पास आज अपने तर्क है।

''वर्तमान सामाजिक व्यवस्था ने स्त्री को एक ऐसे 'उत्पाद' के रूप में पेश किया है जो पुरुषों द्वारा 'उपयोग' और 'विनिमय' में लाया जाता है। स्त्री की स्थिति पण्य–वस्तु या 'सामग्री' की है। सामग्री बनी स्त्री बोलने के अधिकार से वंचित है। उपयोग और विनिमय के लिए काम में आने वाली वस्तु बोलने और विनिमय के व्यापार में हिस्सेदारी का दावा कैसे कर सकती है? 'साम्रगी' कभी अपने आप स्वयं को बाजार में नहीं ले जाती और अगर वह बोले तो बिल्कुल नहीं? अतः कुल मिलाकर स्त्री को एक ऐसे 'इफास्टक्चर' की तरह रहना होगा जिसे समाज और संस्कृति मान्यता नहीं देगी। उनके 'सेक्सुअलाइज्ड' कामुकतापूर्ण शरीर का उपयोग, उपभोग और वितरण समाज व्यवस्था के संस्थान और पुनरूत्पादन के उस रूप को पेश करता है जो स्त्री को कभी भी 'सब्जेक्ट' की तरह नहीं देखता।''[1]

कहना न होगा कि स्त्री आज भी जिस तरह का अर्थहीन, अस्तित्वहीन जीवन जी रही है, दुःखों और कष्टों को सहनशील, समर्पिता बनकर भोग रही है, जिन अमानवीय हिंसक यातनाओं, संतापों से भरी जिंदगी जी रही है वह पितृसत्तात्मक नैतिक मर्यादा वर्चस्व की देन है। जब तक वह पितृक नैतिकताओं, मर्यादाओं का अनुसरण करेगी तब तक उसका जीवन नारकीय कष्टों, अभिशापों से भरा रहेगा। फिलहाल स्त्री की इच्छाएं, आकांक्षाएं, सपने, इन्द्रधनुषी कल्पनाएं धूमिल हैं, क्योंकि उसके लिए घर में एक रोशनदान की व्यवस्था है, उस रोशनदान को भेदती रोशनी और हवा ही उसको लगती है, क्या वही जिंदा रहने के लिए काफी नहीं है। वह घर में रहे या बाहर उसके लिए रोशनदान की सी रोशनी और हवा ही पर्याप्त है। इससे अधिक उसके पास कुछ नहीं है, क्योंकि वह एक आदर्श देवी स्वरूप भारतीय स्त्री गरिमा से मंडित है। भूमंडलीकरण ने इस नई औरत को जन्म अवश्य दिया लेकिन वह एक नए मर्द को जन्म नहीं दे पाया जो इस 'पावर वुमैन' के साथ नए तरह के नर–नारी संबंधों का सिलसिला शुरू कर सकता है।

---

[1] सिंह, डॉ. सुधा, ज्ञान का स्त्रीवादी पाठ, प्रथम संस्करण 2008, ग्रंथ शिल्पी इंडिया प्रा. लि. लक्ष्मी नगर, दिल्ली, पृ.87